कविताएँ

MOHIT SINGH

कभी तन्हाई में मिलते.....

कभी तन्हाई में मिलते, मेरे दर्द को कुछ बाँटते।

इस तन्हा दिल के ज़ख्मों, पर कुछ मरहम लगा जाते।

आँखो से छलकते आँसू को, अपने हाथों से पोछ जाते।

मेरे टूटे हुए सपनो को, तुम फिर से जोड़ जाते।

तेरे साथ की आश में, मैनें कितनी साँसे जी ली।

अब और नही जीना मुझे, इस तन्हाई के संग।

प्यार में कितने लोग मरे, मुझे नही मरना।

एक बार अपना कह दे, मुझे तेरे संग है रहना।

ज़ुबाँ पे बस नाम तेरा है, मैं और नही कुछ कहता।

कभी तन्हाई में मिलते.....

सागर को साहिल मिला,लहरों को मिला सागर।

अश्कों को मिला ना सहारा कहीं, ज़ख़्मों को मिला ना मरहम।

जीवन के हर मौसम, मुझको पतझड़ से लगते।

इस तन्हा दिल में अरमान, काँटों से मुझे चुभते।

तन्हाई का दर्द कभी तूने सहा होता,

सहा अगर होता तो, ये दर्द दिया ना होता।

कभी तन्हाई में मिलते.....।

काँटे भी दोस्त हुआ करते हैं

कली थी,कली थी,

नन्हीं सी प्यारी-सी गुलाब की कली थी।

अहंकार में डूबी-मुस्कुराती इतराती कली थी।

सोच-सोच के बनूँगी प्यारा फूल मैं वह खुश हो जाती थी।

देख-देख काँटों को मन-ही-मन जल जाती थी।

कहती थी सखियों से सदा,हैं कितने बदकिस्मत हम,

जो रहते काँटों के बीच सदा।

भोले-भाले काँटे सदा उसे समझाते थे।

हम हैं प्यारे दोस्त तुम्हारे,

हमको ना दुश्मन मानो तुम।

पर नही समझती उनको दोस्त,उनसे दूर रहा करती वह।

बीते दिन,खिल गयी कली,

बन गयी प्यारा फूल वह।

देख उसे ललचाया कोई,हाथ बढ़ाया तोड़ने उसको,

यह देख घबराई वह,पर चुभ गये काँटे कई हाथ में उसके।

नही तोड़ पाया फूल वह,

भाग गया लहुलूहान हाथ लिए।

लगी पछताने अपनी ग़लती पे वो,माँगी माफी काँटों से उसने।

कहती है सखियों से अब वह,

काँटे भी दोस्त हुआ करते हैं।

प्रेरणा

गमों को भूल के,तू हँसना सीख ले।

हर पल को तू अब जीत ले,खुशियों से भर दामन को।

कुछ कर ऐसा की वक्त तेरा गुलाम बन जाए।

हर लम्हा तू मुस्कुराए,गीत तेरा सब गुनगुनाए।

हर लम्हें को जी ले,कोई लम्हा ना वापस आएगा।

हर पल तू चलना सीख ले,रुकना तू अब छोड़ दे।

हर मोड़ पे नाम लिख अपना,दूसरों को सलाम करना छोड़ दे।

गिरना तू अब भूल जा,झुकना तू अब छोड़ दे।

ऐसी तकदीर बना की दुनिया तुझे सलाम करे।

ख्वाबों मे रहना छोड़ दे,जीवन की सच्चाई को जान ले।

वक्त को थाम दे तू अपना नाम दे।

मंज़िल पास है उसको पहचान ले।

जिंदगी की जंग तू अब जीत ले,इससे ना तू इतना प्यार कर।

जिंदगी तो पल भर की है,इसमें तू कुछ काम कर।

उलझनों से निकल कर देख दुनिया को,उसका तू सरताज बन।

गमों को भूल कर तू हसना सीख ले।

छूटते गये

छूटते गये,बिछड़ते गये,

प्यार के पन्ने बिखरते गये।

खुदा मेरी फरियाद है तुझसे,

मुझसे से प्यार मिला दे।

प्यार की झलक के खातिर,

कितनी रह मैं भटका हूँ।

मेरा मज़हब प्यार बना,

दिल मेरे महबूब बसा।

घाव हैं दिल पर ऐसे लगे,

कि दिल के टुकड़े –टुकड़े हुए।

प्यार की खातिर रोया हूँ,

हर रात को मैं जागा हूँ।

हर दर पर झुकाया माथा है,

हर दर से प्यार ही माँगा है।

हवाओं से कहता मेरा दिल,

मेरी पुकार को उस तक पहुँचा दे।

खुदा मेरी फरियाद है तुझसे,

मुझसे मेरा यार मिला दे।

छूटते गये,बिछड़ते गये,

दिल के रिश्ते टूटते गये।

यारों का साथ छूट गया,

वादे सारे टूट गये।

अपने हमसे रूठ गये,

सब रिश्ते-नाते छूट गये।

आँखों में पानी भर आया,

दिल का दर्द उमड़ आया।

छूटते गये,बिछड़ते गये,

प्यार के पन्ने बिखरते गये।

जज्बात बयाँ करते.....

जज्बात बयाँ करते करते,

हालात बिगड़ गये।

इज़हार मोहब्बत का क्या करते,

वो हमसे जुदा हो गये।

दर्द समेटे इस दिल में,

हम उनसे कुछ कहते,

अफ़सोस की कुछ कहते,

पहले ही जुदा हम हो गये।

तन्हाई मे ऐसे डूबे,

की सब कुछ लूटा बैठे।

महफिल में भी हम,

तन्हा तन्हा रहने लगे।

ज़ज्बात बयाँ करते करते,

हालात बिगड़ गये।

हम जिनसे मोहब्बत करते,

वो हमसे जुदा हो गये।

पलकों पर सजे अरमान टूटे,

और पलकें भी मेरी भीग गयीं।

जितना खुद को समेटा था,

उतना ही हम बिखर गये।

उम्मीदें जो कुछ बची थी,

वो सब धुँधली हो गयी।

फूलों सा खिलना था मुझको,

पतझड़ सा बरस गये।

ज़ज्बात बयाँ करते करते,

हालात बिगड़ गये।

मंज़िल की ओर बढ़े कदम....

मंज़िल की ओर बढ़े कदम,

ना जाने कब भटक गये।

बढ़ते गये कदम आगे,

और मंज़िल पीछे छूट गयी।

भटक गया मुसाफिर देखो,

खुद ही राह बनाने वाला।

मंज़िल की ओर बढ़े कदम,

ना जाने कब भटक गये।

जिन हाथों की लकीर में अपनी तकदीर लिखी,

उन हाथों में अपनी बर्बादी की तस्वीर दिखी।

पीछे जो घाव लगे थे दिल पर,

आज वो फिर से उभर आए।

जिनके सहारे कदम बढ़ाए,

वो एक पल भी साथ नहीं।

जिनके साथ की आश लिए थे,

वो मंझधार मे छोड़ गये।

मंज़िल की ओर बढ़े कदम,

ना जाने कब भटक गये।

खफा हुए वो लोग हमसे ,

जो हमको वफ़ा समझते थे।

किश्मत से वो दूर हुए,

जो साथ अपने चलते थे।

शान को अपनी लुटा के हम,

एक प्यार का फूल खिलाने चले,

शान तो अपनी लुटा चुके,

पर फूल ना हम खिला सके।

मान को अपने खो कर,अपमान को अपने भूल गये,

कुछ रिश्ते बचाने को हर दर्द दिल पे झेल गये।

मंज़िल की ओर बढ़े कदम,

ना जाने कब भटक गये।

ख्वाब टूटे

मीठे मीठे ख्वाब टूटे,

अपने सारे सपने टूटे।

रास्ते बदल गये,

जख्म दिल में भर गये।

वक्त ने अपना आँचल बदला,

काँटों का सेज सज़ा दिया।

अपना कहने वालो को,

कितना बेगाना बना दिया।

मीठे मीठे ख्वाब टूटे,

अपने सारे सपने टूटे।

मंज़िल पीछे छूट गयी,

आगे रास्ता भूल गये।

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below